शुक्ल की शैलीगत विशेषताएं

प्रोफेसर -रौशन कुमार (हिन्दी विभाग)

जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल दरभंगा

हिन्दी प्रतिष्ठा ।।।

शुक्ल जी ने अपने निबंधों में आवश्यकता और विषय के अनुरूप विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उनकी शैली उनके व्यक्तित्व की परिचायक है। संक्षेप में शैली के जो विविध रूप उनके निबंधों में दिखाई पड़ते हैं उनका विवेचन निम्न शीर्षको में किया जा सकता है।

1 आलोचनात्मक शैली---- इस शैली का प्रयोग शास्त्रीय समीक्षा संबंधी निबंधों में किया जाता है। यह चिंतन प्रधान शैली है, जिसमें तर्क और विश्लेषण की प्रधानता है ,चिंतन का गंभीर और भाषा की सुव्यवस्था इस शैली में दिखाई

पड़ती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है- "जिस प्रकार आत्मा की मुक्त अवस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय मुक्त अवस्था रस दशा कहलाती है। हृदय कि इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है उसे कविता कहते हैं।

2 गवेषणात्मक शैली- सैद्धांतिक समीक्षा संबंधी निबंधों में इस शैली के दर्शन होते हैं इसमें विषय प्रतिपादन की अद्भुत क्षमता है और सिद्धांत निरूपण अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें वाक्य लंबे हो गए हैं किंतु कहीं भी अस्पष्टता नहीं आने पाई है। इसमें भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त दिखाई पड़ती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है " व्यक्ति संबंधहीन सिद्धांत मार्ग निश्चययात्मिकता बुद्धि को चाहे व्यक्त हो पर प्रवर्तक मन को अव्यक्त ही रहते हैं। वह मनोरंजनकारी तभी लगते हैं जब किसी व्यक्ति के जीवन क्रम के रूप में देखे जाते हैं।"

3 भावनात्मक शैली -शुक्ल जी के निबंधों में हृदय और बुद्धि का संतुलित समन्वय हुआ है। चिंतन की गंभीरता के साथ साथ उनमें भावात्मकता का समावेश भी हुआ है।

जहां उनका हृदय प्रधान हो गया है वहां भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं। इनमें वाक्य अलंकारिक और प्रश्न सूचक हैं ,ह्रदय पक्ष प्रबल है और शुक्ल जी का कवि व्यक्तित्व उभरा हुआ है। जैसे -"चित्रकूट जैसे रम्य स्थल में राम और भरत जैसे रूपवानों की रक्षा का क्या कहना ।

4 हास्यव्यंग पूर्ण शैली- शुक्ल जी ने निबंधों में स्थान स्थान पर हास्य व्यंग का पुट भी दिखाई पड़ता है ।सामाजिक विसंगतियों को व्यक्त करने के लिए वह इस शैली का प्रयोग करते हैं किंतु यह उल्लेखनीय है कि उनका हास्य मर्यादित है और व्यंग आमोघ है। हास्य का प्रयोग वह ऐसे स्थलों पर करते हैं जहाँ विषय की वस्तुगत विशेषता गंभीर विचार सूत्रों द्वारा नहीं समझाई जा सकती, एक उदाहरण द्रष्टव्य हैं-- " मोटे आदमियों तुम जरा से दुबले हो जाते अपने अंदेशे से ही सही, तो न जाने कितनी ठठरियों पर मांस चढ जाता ?"

5 समास शैली- शुक्ल के निबंधो में समास शैली का प्रयोग

विशदता से हुआ है। समास शैली में विचारों की सघनता और कम शब्दों से में अधिक बात करने की क्षमता दिखाई पड़ती है। इसे सूत्र शैली भी कहा जा सकता है इसके कुछ उदाहरण निम्नवत है "

1 यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण। 2वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। 3 श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।

6 संस्कृत बहुला अलंकृत शैली- उनके निवंध में संस्कृत पदों वाली शैली का प्रयोग भी मिलता है जो उनकी बुद्धिमता की परिचायक है। यद्यपि इस शैली का प्रयोग उन्होंने अधिक नहीं किया है तथापि यह शैली इस बात की परिचायक है कि शुक्ल जी उच्च कोटि की अलंकारिक भाषा भी लिख सकते थे। इसका एक उदाहरण प्रफुल्ल प्रसून प्रसार के सौरभ संचार मकरंद लोलुप मधुप गुंजार ,कोकिल कूजित निकुंज और शीतल सुखद स्पर्श समीर आदि की ही चर्चा करते रहते है वे विषय ी या भोगलिप्सु हैं

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि शुक्ल जी की शैली उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है। उन्होंने विषय के अनुरूप भाषा शैली को परिवर्तित कर दिया है। उसमें लाक्षणिकता उक्तिवैचित्र अलंकारिता और चित्रात्मकता जैसे गुण विद्यमान है।